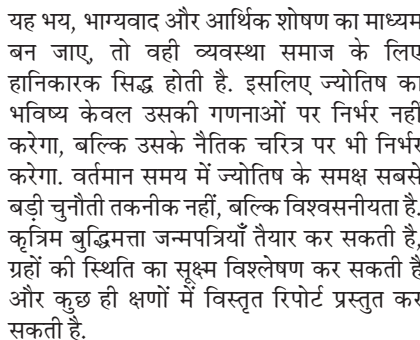


मीन खर्व के कारण अपनी महत्वपूर्ण योजना को बीच में ही रोकना पड़ सकता है, आत्म विश्वास के बल पर मुश्किल हालात से निकलने में सफलता मिलेगी, वाणी पर संयम रखें, अन्यथा करीबी लोग आपसे दूरी बना सकते हैं, पारिवारिक उत्सव में शामिल होने के अवसर मिलेंगे, व्यापारिक यात्रा में नये कार्य को शुरूआत होंगे, परंतु अभी थोड़ा रुकना चाहिये।



पूजा के दौरान कुछ सामान्य नियमों का पालन भी आवश्यक माना गया है . देवताओं को हमेशा ताजे, सुगंधित और स्वच्छ फूल ही अर्पित करने चाहिए . मुरझाए, टूटे हुए या जमीन पर गिरे फूल पूजा में इस्तेमाल नहीं किए जाते . तुलसी दल और बेलपत्र जैसे पूजन सामग्री से जुड़े नियमों का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए . धार्मिक विद्वानों के अनुसार श्रद्धा, पवित्रता और विधि-विधान के साथ अर्पित किए गए पृथ्व भगवान के प्रति समर्पणा का प्रतीक होते हैं .

नानातन धर्म में तुलसी की केवल एक औषधीय पौधा ही नहीं, बल्कि देवी स्वल्प और भगवान विष्णु की अत्यंत प्रिय मानी गई है। इसी कारण तुलसी की माला का धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व भी विशेष बताया गया है। वैष्णव परंपरा में तुलसी की माला धारण करना भगवान विष्णु, श्रीकृष्ण और श्रीराम के प्रति श्रद्धा, भक्ति और समर्पण का प्रतीक माना जाता है। धार्मिक ग्रंथों में उल्लेख मिलता है कि तुलसी की लकड़ी से बनी माला धारण करने वाला व्यक्ति सदाचार, संयम और सात्विक जीवन अपनाने के लिए प्रेरित होता है। यही वजह है कि आज भी बड़ी संख्या में श्रद्धालु नियमित रूप से तुलसी की माला पहनते हैं, और जप के लिए भी इसी माला का उपयोग करते हैं। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार तुलसी की माला धारण करने से मन की चंचलता कम होती है, मानसिक शांति प्राप्त होती है और भगवान विष्णु विशेष कृपा मिलती है। माला यह माला व्यक्ति को नकार से बचाने और आध्यात्मिकता ओर अग्रसर करने में सहायक है। वैष्णव संप्रदाय में दीक्षा के बाद की माला धारण करने का प्रचलित है, जिसे ईश्वर रक्षा धर्म के प्रति प्रतीक माना जाता है। इसके साथ ही भगवते 'हरे कृष्ण' तुलसी धारण करना माना गया है। तुलसी धारण करने वाले धार्मिक नियम हैं। माला को स्वच्छता और साथ पहनना चाहिए। सम्मान बनाए रखना आना गया है। कई परंपराओं में और तामसिक भोजन न रखने की सलाह दी जाती है।

घर में रसोई केवल भोजन बनाना का स्थान नहीं होती, बल्कि इसे परिवार के स्वास्थ्य, सुख-समृद्धि और सकारात्मक ऊर्जा का केंद्र भी माना जाता है। वास्तुशास्त्र में रसोई की दिशा, उसकी बनावट और उसमें रखी जाने वाली वस्तुओं का विश्लेषण महत्व दिया गया है। मान्यता है कि यदि रसोई वास्तु के अनुरूप बनाई जाए और उसमें निर्धारित नियमों का पालन किया जाए, तो घर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है तथा परिवार के सदस्यों के स्वास्थ्य और आर्थिक स्थिति का वास्तु संबंधी मान्यताएं धार्मिक और परंपरिक विश्वासों पर आधारित हैं तथा इनके प्रभावों के वैज्ञानिक प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं। वास्तुशास्त्र के अनुसार घर की रसोई के लिए सबसे शुभ दिशा आग्नेय कोण

